शिक्षा के द्वारा सामाजिक बदलाव लाने में महत्त्वपूर्ण कड़ी बन सकता है, मेंटर शिक्षक।

मेंटर शिक्षक नरेन्द्र सिंह से रंजना की बातचीत

पाठशाला के अगस्त के अंक में हमने दिल्ली में शिक्षक समर्थन कोशिशों की पड़ताल लेख छापा था जिसमें दिल्ली के सरकारी स्कूलों में हुए चर्चित बदलाव और उनमें की गई विविध पहलों की चर्चा की गई थी। शैक्षिक बदलाव की इस प्रक्रिया में मेंटर शिक्षकों की केन्द्रीय भूमिका थी। इसलिए इस अंक में इस अभियान से जुड़े मेंटर शिक्षक नरेंद्र सिंह से मेंटर शिक्षक के चयन, तैयारी, भूमिका और चुनौतियों सहित अभियान के विभिन्न पहलुओं पर बात की गई है।

सवाल : मेंटर शिक्षक की अवधारणा क्या है? शिक्षा विभाग को एक मेंटर शिक्षक से क्या अपेक्षाएँ हैं?

नरेन्द्र सिंह : वर्ष 2016 के मार्च महीने में दिल्ली सरकार के शिक्षा मंत्री ने दिल्ली के सरकारी स्कूलों में पढ़ाने वाले शिक्षकों को मेंटर शिक्षक बनने का आह्वान किया। उत्साही, अनुभवी, नवाचारी और बालमन को जानने-समझने वाले शिक्षकों को आगे आकर अपना योगदान देने की बात कही गई। इस योजना के अन्तर्गत एक मेंटर शिक्षक से मेहनत, लगन, समर्पण और शिक्षा में सुधार के लिए कार्य करने की अपेक्षा रखी गई।

सवाल : मेंटर शिक्षक बनने के लिए आपको किस-किस प्रक्रिया से गुजरना पड़ा?

नरेन्द्र सिंह : चयन की कसौटी एक इंडक्शन कार्यशाला रखी गई जिसमें प्रतिभागियों के लेखन एवं वाचन कौशल के साथ मनोवैज्ञानिक परीक्षण भी किए गए। इनमें कुछ इस तरह के प्रश्नों पर लिखना व बोलना था- आप मेंटर शिक्षक क्यों बनना चाहते हैं? आपकी स्ट्रेन्थ क्या हैं? आपकी कमज़ोरियाँ क्या हैं और आप अपनी कमज़ोरियों को कैसे दूर करेंगे? फिर समूह चर्चा भी इस कार्यशाला का एक हिस्सा था जिसमें चार-चार के समूह में दिए गए मुद्दों यथा- महिला सुरक्षा, पर्यावरण आदि पर चर्चा करनी थी। समूह चर्चा में उत्कृष्टता भी चयन के मानदण्ड में शामिल था।

सवाल : चयन के बाद आपकी भूमिका को ठीक से निभाने के लिए क्या-क्या तैयारी करवाई गई?

नरेन्द्र सिंह : सर्वप्रथम अप्रैल 2016 में उत्तरप्रदेश के हापुड़ में जीवन विद्या शिविर कराया गया। इस शिविर का मक़सद हमें आत्मिक रूप से तैयार करना था। इसमें जो काम हम कर रहे हैं वह कैसे कर रहे हैं, क्या हम इसमें दूसरों को जगह देते हैं? साथ ही यह भी कि हमें तो नियुक्ति पत्र के साथ यह गारंटी भी मिली है कि आपको फलाँ-फलाँ सुविधाएँ मिलेंगी ही, लेकिन क्या हम किसी तरह की कोई गारंटी स्कूल में आने वाले अपने बच्चों को देते हैं? पुनः 21 दिन का गहन प्रशिक्षण डाइट और विद्यालय के समन्वित सहयोग से कराया गया। इसमें मूलतः बच्चों के सीखने-सिखाने और बच्चों से जुड़ने की बात थी। हमने इस दौरान स्कूलों में जाकर कक्षा अवलोकन भी किए और उनपर बातचीत भी हुई। एससीईआरटी द्वारा विषय ज्ञान संवर्धन कार्यशालाएँ हुईं। मेरा विषय हिन्दी है, इस विषय की कार्यशाला में विधाओं की बात हुई, यह बात हुई कि जीवन से जुड़े उदाहरण कैसे कक्षा में लाए जा सकते हैं, नाटक कैसे पढ़ाएँ, नाटक और उसकी मंचता और सीखना आदि। कुल मिलाकर मानसिक, आत्मिक, तकनीकी और

प्रायोगिक दृष्टि से शिक्षकों को हुनरमन्द बनाया गया।

सवाल : मेंटर शिक्षक के रूप में आपने क्या–क्या काम किया?

नरेन्द्र सिंह : हमारा मुख्य दायित्व पाँच मेंटी स्कूलों में जाकर छात्रों, शिक्षकों तथा प्रधानाचार्य को अकादमिक मदद उपलब्ध कराना था न कि वहाँ क्या हो रहा है इसकी रिपोर्ट लिखना। इस पूरे कार्यक्रम के मूल में ही सहयोग से स्कूल में काम करना और उनको उन्नत करना था। स्कूलों में ऐसी कई चीज़ें (कभी छोटी तो कभी बड़ी भी) होती रहती हैं जहाँ शिक्षक को मदद की ज़रूरत होती है जैसे एक स्कूल की एक कक्षा में 80 बच्चे थे और उनकी उपस्थिति लेना ही शिक्षक के लिए एक 'काम' था। इसी तरह शिक्षण के लिए रोज़ नई गतिविधियाँ सोचना और उन्हें करना, उनकी समस्याओं को सुनना आदि काम किए। साथ ही शिक्षा विभाग द्वारा शुरू किए गए विशेष अभियान 'चुनौती-2018', रीडिंग अभियान तथा कक्षा दसवीं के 'विश्वास' ग्रुप की मदद करना था। विद्यालय में समुचित शैक्षिक वातावरण के लिए शिक्षकों को तैयार करना। उन्हें बेहतर रणनीति और जीवन्त उदाहरणों के माध्यम से शिक्षण कार्य को उन्नत और फलदायी बनाने के लिए प्रोत्साहित करना। इस दौरान विषय-कार्यशालाओं में रिसोर्स पर्सन की भूमिका का निर्वहन भी किया।

सवाल : मेंटर शिक्षक के रूप में अपने कार्य के दौरान स्कूलों में आपको किस–किस चुनौती का सामना करना पड़ा?

नरेन्द्र सिंह : सबसे पहली चुनौती कनेक्ट बनाने की थी? अपने स्कूल के बाहर के स्कूलों में शिक्षकों तथा विद्यालय प्रमुखों के बीच अपने लिए स्वीकृति का भाव बनाने में समय लगा। पहले-पहल सन्देह की दृष्टि बनी हुई थी, जिसे विश्वास में बदलने की बड़ी चुनौती थी। धीरे-धीरे सामान्य स्थिति बनने लगी। हमने बताया कि हम कमियाँ ढूँढ़ने, शिकायत करने या फ़ोटो खींचने ही नहीं आए हैं, हम तो आपका सहयोग करने आए हैं, आपके मित्र हैं। अपने कार्य और व्यवहार से उनका भरोसा जीतने में सफल रहे।

सवाल : अपने स्कूलों तथा शिक्षकों के साथ कैसे रिश्ता स्थापित किया?

नरेन्द्र सिंह : मैंने विद्यालय तथा बच्चों के शुभचिन्तक के रूप में स्वयं को प्रस्तुत किया। मित्रवत व्यवहार रखा न कि एक अथॉरिटी के डर का। सुनने की क्षमता का विकास किया। तर्कपूर्ण समाधान बताए तथा शिक्षक साथियों को सराहा भी। उपयोगी सुझाव देकर उनके दिल में जगह बनाई। यहाँ एक उदाहरण का भी ज़िक्र करना चाहूँगा। एक दिन एक शिक्षिका को किसी काम की वजह से स्कूल के दफ़्तर में थीं। कक्षा ख़ाली थी बच्चे शोर कर रहे थे। मैं कक्षा में गया और बच्चों से बात शुरू की। जब शिक्षिका आईं तो उन्हें लगा कि उनसे बहुत बड़ी ग़लती हुई है वे थोड़ी घबरा भी गई थीं। तब मैंने उनसे बात कि और कहा कि कक्षा ख़ाली थी अतः मैंने बच्चों से कुछ बातचीत की, अब वे कक्षा ले सकती हैं। मैं उनकी उस कक्षा में बैठा भी और कक्षा में और क्या व कैसे हो सकता है इसपर भी हमने बाद में बातचीत की।

सवाल : कार्य के दौरान आप स्कूल जाकर क्या–क्या करते थे?

नरेन्द्र सिंह : स्कूल में क्लास आब्ज़र्वेशन, शिक्षकों के साथ बातचीत, शिक्षकों तथा बच्चों को फ़ीडबैक, कक्षा-शिक्षण एवं प्रधानाचार्य के साथ सार्थक एवं उपयोगी संवाद करते थे, जैसे—स्कूल में पूरे शिक्षक हैं अथवा नहीं, एसएमसी के साथ मिलकर क्या-क्या कर सकते हैं, क्या सुविधाएँ हैं, क्या और होनी चाहिए। साथ ही हम स्कूल की एक रिव्यू रिपोर्ट भी लिखकर देते थे। और इस रिपोर्ट में महज़ सुझाव ही नहीं होते थे बल्कि पहले यह बात होती थी कि क्या-क्या बातें ठीक हैं, क्या नहीं हैं और फिर जो ठीक नहीं हैं उसके बारे में सुझाव।

सवाल : अपने कार्य के दौरान के कुछ रोचक अनुभव बताइए?

नरेन्द्र सिंह : सबसे रोचक और आश्चर्यजनक तो यह था कि जो लोग शुरुआत में शक-सन्देह

की दृष्टि से देख रहे थे, वे अपनी कक्षा में मुझे ख़ुशी-ख़ुशी ले जाने लगे। विशिष्ट प्रशिक्षण के बाद मैंने अपने मेंटी स्कूलों में कुछ कक्षाएँ भी लीं। मैं जब भी स्कूल जाता, छात्र-छात्राएँ मुझसे अपनी कक्षा में आने का आग्रह करते। मुझे बहुत अच्छा लगता था।

सवाल : आपके हिसाब से दिल्ली के शिक्षा-सुधारों में मेंटर शिक्षकों का कितना योगदान रहा? वह योगदान कितना अनिवार्य और लाभप्रद है?

नरेन्द्र सिंह : एक अच्छी योजना प्रभावी क्रियान्वयन के बिना अधूरी ही मानी जाती है। मेंटर शिक्षकों ने शिक्षा विभाग के नवाचारों तथा नव प्रयोगों को धरातल पर उतारने में अग्रणी भूमिका निभाई। स्कूलों के शिक्षकों तथा विद्यालय प्रमुखों को मानसिक रूप से बदलाव के लिए तैयार किया। एक सकारात्मक सोच तथा बेहतर भविष्य के निर्माण में मेंटर शिक्षकों ने तन, मन व धन से स्वयं को समर्पित किए रखा। उनका यह योगदान मील का पत्थर साबित हुआ। दिल्ली के शिक्षा मंत्री मनीष सिसोदियाजी ने अपनी पुस्तक *शिक्षा मंत्र* में मुक्त कण्ठ से मेंटर टीचर्स की प्रशंसा की है। मेंटर टीचर्स के योगदान को स्कूलों में अकादमिक प्रोन्नत के रूप में देखा जा सकता है। कमज़ोर से कमज़ोर बालक पर भी फोकस किया जा रहा है।

सवाल : मेंटर शिक्षक होने के बाद आपको बतौर शिक्षक भविष्य में अपने लिए क्या सम्भावना दिखती है?

नरेन्द्र सिंह : एक मेंटर शिक्षक की भूमिका निभाने के बाद शिक्षण, प्रशिक्षण और अनुभव के द्वारा समस्याओं के बेहतर समाधान निकालने की क्षमता का विकास हुआ है। विषय की विशेषज्ञता बढ़ी है। कनैक्ट बनाना और संवादशीलता के गुण विकसित हुए हैं। सुनने की क्षमता तथा धैर्य, संयम आदि के साथ व्यक्तित्व में ठहराव की स्थिति बनी है। भविष्य में रिसोर्स पर्सन योजनाकार, प्रश्नपत्र तथा उक्त योजना आदि के निर्माण में सहभागिता की जा सकती है।

सवाल : मेंटर शिक्षक के रूप में आपका सफ़र कैसा रहा? आपको स्वयं में कुछ बदलाव दिख रहा है?

नरेन्द्र सिंह : मेंटर शिक्षक के रूप में मेरा सफ़र अच्छा रहा। बहुत कुछ जानने, सीखने और समझने का अवसर मिला। बहुत से लोगों से भेंट हुई। एक व्यापक दृष्टि में 'सबके साथ सबका विकास' की भावना पुष्ट हुई। बदलाव के रूप में वस्तुगत, तथ्यपरक तथा कार्यगत दृष्टिकोण का विकास हुआ। 'अमुक विद्यार्थी मुझे अच्छा लगता है' के स्थान पर 'अमुक विद्यार्थी का यह कार्य और व्यवहार मुझे अच्छा लगता है'। अब मैं इस माइंडसेट के साथ काम करता हूँ।

सवाल : मेंटर शिक्षक रहने के बाद स्कूल वापस आकर कैसा महसूस कर रहे हैं?

नरेन्द्र सिंह : यह अनुभव घर वापिसी जैसा है। कुछ हल्का महसूस कर रहा हूँ। पहले से अधिक ऊर्जा, उमंग, आत्मविश्वास और टीम भावना से लबरेज़ हूँ। अपने कार्य का मूल्यांकन एवं विश्लेषण करने का नया जज़्बा लेकर आया हूँ।

सवाल : कुल मिलाकर मेंटर शिक्षक की अवधारणा कितनी उपयोगी रही?

नरेन्द्र सिंह : दिल्ली के शिक्षा विभाग में 'मेंटर शिक्षक की अवधारणा' ख़ासी चर्चित रही है। नीति-निर्माताओं का मृदुल एवं स्नेहिल व्यवहार मेंटर शिक्षकों को संजीवनी देने का काम करता है। लगभग 200 मेंटर शिक्षकों ने दिल्ली की शिक्षा क्रान्ति में अपनी अमिट छाप छोड़ी है। इसकी उपयोगिता 'शिक्षक-बालक' सम्बन्धों में कनैक्ट और ट्रस्ट बिल्डिंग के रूप में देखी जा सकती है। हैप्पीनेस करिकुलम तथा इंटरप्रन्योरशिप माइंडसेट करिकुलम का प्रभावी क्रियान्वयन मेंटर शिक्षकों के सहयोग से ही हो पाया है।

सवाल : क्या स्कूल स्तर पर मेंटर शिक्षक होना चाहिए या इसे स्टेट लेवल पर ही किया जा सकता है?

नरेन्द्र सिंह : जी हाँ, स्कूल स्तर पर टीडीएस कार्यक्रम शुरू किया गया है। इसके द्वारा स्कूल तथा स्टेट लेवल का साझा एवं समन्वित उदाहरण प्रस्तुत किया गया है।

सवाल : क्या इसे अन्य राज्यों में भी लागू किया जा सकता है ?

नरेन्द्र सिंह : जी हाँ, यदि सम्बन्धित राज्य या केन्द्र सरकार को लगता है कि दिल्ली के शिक्षा विभाग का यह प्रयोग सफल एवं उपयोगी है तो इसे पूरे देश में भी लागू किया जा सकता है। एक मेंटर शिक्षक, शिक्षा के द्वारा सामाजिक बदलाव लाने में महत्त्वपूर्ण कड़ी बन सकता है। इस पहल का स्वागत होना चाहिए।

सवाल : अन्य राज्यों को 'मेंटर शिक्षक कार्यक्रम' लागू करने की स्थिति में आप क्या सुझाव देना पसन्द करेंगे ?

नरेन्द्र सिंह : सम्बन्धित राज्य को सर्वप्रथम शिक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता में लाना होगा। अपनी देशकाल परिस्थितियों के अनुरूप इसे लागू करना चाहिए। बेहतर हो पहले डाइट या अन्य शिक्षा केन्द्रों पर 'शिक्षक संवाद' कार्यक्रम रखे जाएँ। शिक्षक एवं प्रधानाचार्यों को मेंटर शिक्षक योजना के प्रभावी क्रियान्वयन, उद्देश्यों और सम्भावित चुनौतियों से परिचित कराया जाना चाहिए। इसका बड़ा लाभ यह होगा कि मेंटर शिक्षकों की सहज स्वीकृति शिक्षकों के बीच बन जाएगी।

रंजना : आपका आभार और साधुवाद।

नरेन्द्र सिंह : जी धन्यवाद, आपका अभिनन्दन।

नरेन्द्र सिंह, प्रवक्ता हिन्दी राजकीय उच्चतर माध्यमिक बाल विद्यालय सी–ब्लॉक, संगम विहार, नई दिल्ली
सम्पर्क : narendranihar@rediffmail.com

रंजना मूलतः पत्रकार हैं। कई पत्रिकाओं व अख़बारों में कार्य किया है। शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला और विकास के विषयों पर कई स्वयंसेवी संस्थाओं में रहकर काम किया है। दस वर्षों से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में कार्यरत हैं।
सम्पर्क : ranjna@azimpremjifoundation.com